डॉ. किशोर पँवार

एक सुबह परगुलेरिया के नाम

23 सितम्बर 2008 की एक खूबसूरत सुबह। समय यही कोई आठ बजे। घर से निकलते ही तय कर लिया था कि आज सबसे पहले दुबेजी के घर की बागड़ पर लगी परगुलेरिया की बेल के फूलों की तस्वीरें लेना है। तय इसलिए कर रखा था क्योंकि पिछली बार चूक हो गई थी। इसके सुन्दर झुमकेदार फूलों पर मेरी नज़र पहले से ही थी। परन्तु किसी कारणवश फोटो न ले पाया और पौधा सूख गया।

परगुलेरिया एक सामान्य बरसाती वार्षिक बेल है जिसे बोलचाल में उतरन और जुटक भी कहते हैं। यह सड़कों के किनारे व गाँवों में काँटों की बागड़ या तार की जालियों पर चढ़ी रहती है। सर्दी बढ़ते ही यह सूखने लगती है। लेकिन तब तक इसका वंश चलाने के लिए बहुत सारे फल इस पर लग चुके होते हैं। इनमें अकाव की तरह रुईदार बीज भरे होते हैं। बरसात में अंकुरित होकर ये एक नई शुरुआत करते हैं। इस पर गहरे हरे रंग की बड़ी-बड़ी हृदयाकार पत्तियाँ जोड़े में लगी होती हैं। पूरी बेल रोएँदार होती है जिसे तोड़ो तो अकाव की तरह दूध टपकने लगता है। पत्तियाँ पाँच से दस सें. मी. लम्बी होती हैं। झुमके जैसे फूल पूरी बेल पर यहाँ-वहाँ लटके रहते हैं। यह एक औषधीय पौधा है जिसे कफ, दमा, मियादी बुखार आदि के उपचार में काम लिया जाता है। परन्तु मेरी नज़र तो इसके दूधिया रंग के सुन्दर नक्काशीदार फूलों पर थी। अकाव जैसे इसके फूलों पर पंखुड़ियों के अलावा सुन्दर नक्काशीदार मुकुट (करोना) भी होता है। फूलों की सुन्दरता बढ़ाने के साथ-साथ यह खास रचना कीट-पतंगों को पराग भी मुहैया कराती है। यह कुछ ही फूलों में पाई जाती है। जब मैं फूलों की फोटो खींचने के लिए आगे बढ़ा तो क्या देखता हूँ कि फूल पर एक काले-मटमैले रंग का पतंगा भी बैठा है। यानी फूल का परागणकर्ता भी वहीं है। सोचा, यह एक बढ़िया तस्वीर होगी। परन्तु तभी ख्याल आया कि यह पतंगा सुबह-सुबह यहाँ क्या कर रहा है? पतंगे तो रात ही में ही सक्रिय होते हैं। इससे पहले शाम के धुँधलके में फूलों के हरे-सफेद झूमरों पर कई बार पतंगों की बारात देख चुका था। शाम ढलते ही खिलने वाले ये फूल रोशन झाड़-फानूस से कम आकर्षक नहीं होते। फिर इन पर पतंगे कैसे न आएँ!

अनोखा खेल

फूल को फोकस में लेते ही पतंगा थोड़ा फड़फड़ाया। गौर से देखा तो पता चला कि यहाँ तो प्रकृति का एक दूसरा ही खेल चल रहा है। फूल पर छुपे एक शिकारी ने अपनी टाँगों से इस पतंगे को जकड़ रखा है। क्या गज़ब संयोग है! सफेद (क्रीम) फूल पर सफेद (क्रीम) मकड़ी छुपी बैठी है। छद्मावरण का एक बेहतरीन उदाहरण।

बड़ा अजब खेल है प्रकृति का! इसमें उत्पादक फूल है। शाकाहारी उपभोक्ता पतंगा है जो मकरन्द एवं परागकणों से अपना पोषण पाने फूल के पास आया है। परन्तु उसे क्या पता था कि वह खुद किसी माँसाहारी उपभोक्ता यानी मकड़ी का भोजन बन जाएगा। कुदरत का यह ताना-बाना जिसे खाद्य श्रृंखला (फूडचेन) कहते हैं, में पलक झपकते ही शिकारी खुद शिकार बन जाता है। पतंगे-तितलियाँ फूलों के पराग को चुराने आएँगे ही यह बात फूलों पर बैठी मकड़ी को पता है। यह भी वह जानती है कि शिकार की नज़र से बचना भी है तभी तो वह फूल जैसी ही है। वहाँ बैठी है घात लगाए। पतंगा पराग लेने आया और बन गया मकड़ी का शिकार।

अनोखा शिकारी

फूलों पर बैठी यह मकड़ी कुछ अलग है। शिकार को फाँसने के लिए यह दूसरी मकड़ियों की तरह जाले नहीं बनाती। इन मकड़ियों को "फ्लावर स्पाइडर्स" कहते हैं। ये शिकारगाह के रूप में प्रकृति के फन्दों (फूल) का ही उपयोग करती हैं। इन्हें थोमिसिडी कुल में रखा गया है। इनका एक नाम केकड़ा मकड़ी भी है क्योंकि ये केंकड़े की तरह दाएँ-बाएँ भी चलती हैं। उन्हीं की तरह ये शिकार को अपनी अगली भुजाओं से झपट्टा मारकर पकड़ती हैं। शिकार करने वाली अधिकांश मकड़ियाँ मादा होती हैं। इनके नर इनसे छोटे होते हैं।

अनोखी शिकारगाह

इस मकड़ी ने जिस शिकारगाह का उपयोग किया उसकी खूबसूरती पर भी ज़रा गौर फरमाइए। फूलों के हर झुमके में आठ-दस कलियाँ और फूल होते हैं। फूल के डण्ठल दो-तीन सें.मी. लम्बे होते हैं जिनके सिरे पर फूल खिलते हैं। सभी झुमकों में दो-तीन फूल खिलते हैं हर रोज़।

लगभग एक सें.मी. का फूल गज़ब का सुन्दर होता है। पाँच पंखुड़ियाँ बाहर से हल्की जामुनी होती हैं। इनके किनारे पर बड़े-बड़े सफेद रोएँ होते हैं। कलियाँ छोटे-छोटे हरे घुँघरुओं जैसी लटकी हुई होती हैं।

फूल को बारीकी से देखने पर इसके केन्द्र में ऊपर की ओर उठा गुम्बद के आकार का करोना नज़र आता है। लगता है जैसे पाँच सफेद नन्ही चिड़ियाँ दाना चुगने की मुद्रा में फूल के बीच में बनी एक हरी थाली पर अपनी चोंच सटाए बैठी हैं।

यह हरी थाली दरअसल फूल के मादा भाग का ही एक हिस्सा है। कुल मिलाकर झालरदार पंखुड़ियाँ और चमकदार, गठीला करोना इस फूल को बेमिसाल खूबसूरती देता है। इसीलिए मुझ जैसा प्रकृति प्रेमी बार-बार इसके पास जाने को मजबूर हो जाता है। इससे प्रकृति की हरकतों, उसके मिजाज़ को समझने का मौका भी मिलता है। तुम भी देखना तुम्हारे आसपास इन खूबसूरत शिकारगाहों पर कोई नहीं बैठा किसी नए शिकार की तलाश में...

सभी फोटोः किशोर पँवार